फरीदाबाद
मजदूर समाचार
मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर 122 अगस्त 1998

अस्वीकार–इनकार की दमक–धमक

जीवन में हम कई बातें, चीजें, राहें, व्यवहार अस्वीकार करते हैं। हमारे यह इनकार कोई ठहरे हुये, स्थिर प्रकृति के नहीं होते। जिन्हें हम एक समय अमान्य करते हैं उनमें से कुछ को बाद में स्वीकार करते हैं तो कई नये इनकार भी आरम्भ करते हैं। क्या स्वीकार करते हैं और क्या अस्वीकार करते हैं यह हमारे जीवन को गहरे तौर पर प्रभावित करते हैं। किस- किस को मानें तथा किस- किस से इनकार करें पर बार- बार आपस में चर्चायें करना स्वाभाविक तो है ही, अत्यन्त महत्वपूर्ण भी है। यहाँ कुछ मजदूरों के बीच अस्वीकार- इनकार पर हुई चर्चाओं में उभरे कुछ पाइन्ट विचार- विमर्श तथा समृद्धि के लिये प्रस्तुत हैं।

● **" किसी वरकर की सुपरवाइजर से, मैनेजर से शिकायत नहीं करना।"**
" किसी मजदूर के खिलाफ मैनेजमेन्ट की तरफ से गवाही नहीं देना।"

यह बहुत सामान्य इनकार हैं। इन आम अस्वीकारों के पीछे अनुभवों से उत्पन्न हुये तथा मजदूरों में व्यापक स्तर पर फैले यह अहसास, यह समझ हैं :

— गलती किस से नहीं होती? आज तुम्हें फँसाया तो कल मेरा नम्बर। अपने बीच विवादों के समाधान के लिये मैनेजमेन्ट को पँच बनाना अपने लिये काँटे बोना है।

— एक- दूसरे के प्रति निजी दुश्मनी का होना, एक- दूसरे पर शक करना मजदूरों के बीच तालमेल में आड़े आते कँटीले तार हैं। बिना आपसी तालमेल के मैनेजमेन्ट का मुकाबला करना बहुत ही मुश्किल है।

— और, मैनेजमेन्ट को मजबूत करना अपने पक्ष को कमजोर करना है।

जगह- जगह और बार- बार के लीडरों व लीडरी के अनुभवों ने इधर व्यापक स्तर पर लीडर- लीडरी को अस्वीकार बना दिया है। यह देख कर कि मैनेजमेन्ट और लीडरी एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, आपसी विवादों को लीडरों के पास ले जाने से भी मजदूर बड़े पैमाने पर इनकार करने लगे हैं।

अपने बीच के विवादों को शीघ्र हल करने के लिये आपस में मिल- बैठ कर मामले निपटाना सरल, सस्ता और बिना खतरे का रास्ता है। यह राह चौड़ी होती नजर आ रही है और इसका आधार है अपने बीच गैरबराबरी को अस्वीकार करना। यह सही है कि सब बराबर नहीं हो सकते पर यह भी सही है कि आपस में हमारा व्यवहार " गैरबराबरी नहीं" पर आधारित होता है तो हमारे बीच बढिया तालमेल होते हैं और प्रत्येक व्यक्ति की साझेदारी होती है। आपसी रिश्तों में " गैरबराबरी नहीं" की बुनियाद हर मजदूर द्वारा खुद कदम उठाने तथा मजदूरों की टोलियों के बीच तालमेल का भी आधार है।

● **" किसी की बराबरी करना अस्वीकार है। अगर 500 पीस निर्धारित हैं तो उतने ही बनाते हैं, यह नहीं कि वह 600 पीस बना रहा है तो हम भी बनायें।"**

" होड़ वाला काम नहीं करते। मजदूरों की होड़ में अधिक माल निकालना अस्वीकार है।"

" कभी भी वाहवाही के चक्कर में ज्यादा उत्पादन नहीं किया।"

यह भी बहुत सामान्य इनकार हैं। स्कूल, रेडियो, टी वी के द्वारा होड़- प्रतियोगिता- कम्पीटीशन के जो संस्कार देने के प्रयास होते हैं उनके विपरीत फैक्ट्रियों में होड़ की यह आम अस्वीकृति मजदूरों के अनुभवों पर आधारित है :

— अपने सहकर्मियों के साथ कम्पीटीशन में पड़ने का सीधा नतीजा सब के लिये काम के बोझ का बढना, काम की रफ्तार का बढना होता है।

— ज्यादा काम, तीव्र काम स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है।

— तीव्रतर काम का एक और अर्थ है ज्यादा संख्या में हाथ- पैर कटना।

— अधिक काम करने का मतलब है कम लोगों की उत्पादन के लिये जरूरत। दरवाजे पर छँटनी की दस्तक।

— ज्यादा व तीव्र काम तन को तो खींचता ही है, मन को सिकोड़ता भी है। मात्र पैसों के लिये खटने के दौरान हँसी- मजाक व बातचीत के लिये वक्त नहीं हो तो पगला जायेंगे।

मजदूरों के बीच होड़ मैनेजमेन्ट की शक्ति में वृद्धि करती है और मजदूरों के लिये नुकसान ही नुकसान लिये है इसीलिये वरकर परस्पर प्रतियोगिता से नफरत करते हैं और आवश्यकता पड़ने पर परेशानी उठा कर भी इसे रोकते–रोकती हैं।

तभी तो मैनेजमेन्टें होड़ पैदा करने के लिये विद्वानों को रिसर्च में लगाये हैं और मशीन के पुर्जो के विकास की तरह मजदूरों के वास्ते मानव संसाधन विकास (एच. आर. डी.) विभाग खोले हैं। इन्सानों को मशीन के पुर्जे की तरह देखने वाले यह लोग टाइम स्टडी, टी पी एम, टी क्यू एम, बी पी आर, आई ई नोर्मस् की डाइयों में मजदूरों को घिसा- घिसु कर फिट करने की कोशिश करते हैं।

फैक्ट्रियों में क्लासें लगा कर मैनेजमेन्टें विश्व विद्वानों के ज्ञान- विज्ञान की भूल- भुलैया के जरिये जो होड़ पैदा करने में लगी हैं उसे फुस्स करने के लिये होड़ की अस्वीकृति पर मजदूरों में व्यापक चर्चायें आवश्यक हैं।

● **" आपसी रिश्तों पर पैसों की परछाई तक अस्वीकार है।"**

रुपये- पैसों के प्रति अनमनापन तो व्यापक है ही, आपसी रिश्तों में पैसों को पूरी तरह नकारना युवाओं तक ही सीमित नहीं है बल्कि अधिक व्यापक है। फ्री का फैलाव हो रहा है और रुपये- पैसों की अस्वीकृति तेजी से उभर रही है।

यह इनकार आधारित है कटु अनुभवों पर :

— रोज- रोज की अनगिनत खरीद- फरोख्त जिनमें प्रत्येक क्रय- विक्रय एक यातना है।

— रोज की दिहाड़ी के लिये मण्डी में मनुष्यों की बिक्री तो दिखती ही है, माहवार दिहाड़ी के लिये बिकने वालों की संख्या तो दुनियाँ में अरबों में पहुँच चुकी है।

— आपसी व्यवहार में हमें यह अक्सर महसूस होता है कि हमारे सब रिश्तों में पैसों ने तहलका मचा रखा है। दोस्तों के बीच रिश्ते, पड़ोसियों के साथ सम्बन्ध, भाई- बहन के रिश्ते, प्रेम के रिश्ते, पीढियों के सम्बन्ध, स्त्री- पुरुष के रिश्ते, मनुष्य- मनुष्य के बीच के सम्बन्ध, सब मानवों के बीच रिश्ते, मनुष्य व प्रकृति के बीच सम्बन्ध पैसों के भंवरजाल में जकड़े हैं।

(जारी रहेगा, अपने इनकार के सुर मिलाइये।)

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद–121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

हाई पोलीमर लैब्स

प्लाट 6-7-8, सैक्टर– 25 स्थित हाई पोलीमर लैब्स लिमिटेड आई.एस.ओ. 9001 फैक्ट्री की मैनेजमेन्ट हम मजदूरों को बहुत परेशान कर रही है। कभी हमें पलवल के पास दुधौला गाँव में हाई पोलीमर इन्डस्ट्रीज में काम करने को तो कभी सैक्टर–25 में प्लाट नम्बर 72 में केन्टिक केमिकल्स में काम करने को और कभी ओखला में फैक्ट्री में काम करने को मैनेजमेन्ट भेज देती है। हाजरी हमारी हाई पोलीमर लैब्स में लगाई जाती है। ओखला और दुधौला में काम करने के लिये आने-जाने का किराया मैनेजमेन्ट हमें नहीं देती। सब जगह केमिकल का काम है – लिक्विड अमोनिया, लिक्विड क्लोरीन, लिक्विड ब्रोमीन, गन्धक का तेजाब, नमक का तेजाब, कास्टिक, यूरिया आदि इस्तेमाल होते हैं। हर जगह एक्सीडेन्ट का खतरा बना रहता है। ऐसे में हमारी हाजरी का कहीं लगना और हमारे द्वारा काम कहीं और करना बहुत गड़बड़ वाली बात है।

इलेक्ट्रिशियनों, मालियों, स्वीपरों, फिटरों और लोडर-अनलोडरों की हाजरियाँ कम्पनी में लगती हैं और काम करने सी एम डी, डायरेक्टरों, मैनेजरों तथा उनके रिश्तेदारों की दिल्ली, 16 सैक्टर, 15 सैक्टर, 14 सैक्टर और बल्लभगढ़ कोठियों पर भेज दिया जाता है।

हाई पोलीमर लैब्स से कहीं और काम करने जाने से इनकार करने पर गेट बन्द करने और सस्पैण्ड करने की धमकी दी जाती है।

हम में से किसी मजदूर का कोई काम निश्चित नहीं है। मैनेजमेन्ट की जहाँ मर्जी हो वहाँ लगा देती है। कभी मशीन आपरेट करवाते हैं तो कभी बोरी ढुलाते हैं तो कभी रेहड़ी खिंचवाते हैं या पाउडर छनवाते हैं। किसी मजदूर का कोई डेजिगनेशन नहीं है, सब को एक ही रेट देते हैं।

कम्पनी में तीन लक्कड़ के पैर, एस.एस., एच.आई.एस.एस. और शान सेक्युरिटी सर्विस खड़े कर रखे हैं। काम कम्पनी करवाती है, हाजरी कम्पनी भरती है, तनखा ठेकेदार से दिलवाते हैं, ओवर टाइम सिंगल रेट से कम्पनी का कैशियर देता है – लक्कड़ के यह पैर कमीशन के लिये हैं।

पाँच मिनट लेट होने पर मैनेजमेन्ट कभी तो वापस कर देती है और कभी हाफ डे लगा कर आधे दिन के पैसे काट लेती है। हेल्मेट नहीं लगा होने पर दो रुपये तनखा में से काट लेती है। एक तरफ ऐसी कड़ाई और दूसरी तरफ जूते हमें नवम्बर-दिसम्बर 97 में मिल जाने चाहियें थे पर मैनेजमेन्ट ने जुलाई 98 तक नहीं दिये हैं।

हमें दबाने के लिये झूठे आरोप लगा कर मैनेजमेन्ट हमें वारनिंग लैटर देती है और सस्पैण्ड करती रहती है। बीड़ी पीने का झूठा आरोप लगा कर 9 जुलाई को भगवान सा को सस्पैण्ड कर दिया और आज तक ड्युटी पर नहीं लिया है।

28 जुलाई 98 — हाई पोलीमर लैब्स के मजदूर

बाटा

मई 1998 के आरम्भ में बाटा मैनेजमेन्ट और यूनियन के बीच जो एग्रीमेन्ट हुई है उस एग्रीमेन्ट की कापी न तो यूनियन लगा रही है और न मजदूरों में बाँट रही है। चुप्पी साध रखी है। इससे तो मजदूर यही सोच रहे हैं कि यूनियन गेट मीटिंग में मजदूरों को कुछ बोली है और मैनेजमेन्ट के साथ कुछ और समझौता कर रखी है इसलिये यूनियन न तो कापी बाँट रही है और न कापी लगा रही है। बाटा यूनियन के लिये यह बहुत शर्म की बात है जबकि पिछले महीने में मजदूर समाचार के द्वारा भी मजदूरों ने माँग की है। और मजदूर खुद लीडरों से न माँगें इसलिये हम मजदूर समाचार के द्वारा दुबारा माँग कर रहे हैं कि या तो यूनियन कापी लगाये या मजदूरों में बाँटे।

30 जुलाई 98 — बाटा के कुछ मजदूर

वेतन में से गबन और लूट

हम **झालानी टूल्स लिमिटेड,** 10-12 न्यू इन्डस्ट्रीयल एरिया, फरीदाबाद –121006 के मजदूर हैं। मैनेजमेन्ट ने हमें मार्च 1996 से 20 नवम्बर 1997 तक, यानि, 20 माह 20 दिन का वेतन नहीं दिया है। हम 2183 मजदूरों के 40 करोड़ रुपये मैनेजमेन्ट हड़पने की फिराक में है।

इधर हमें जो वेतन दिया जाना शुरू हुआ है उसमें मैनेजमेन्ट भारी गैरकानूनी कटौतियाँ कर रही है। पूरे महीने काम करने के बाद किसी मजदूर को 56 रुपये तो किसी को 250 और किसी को 600 रुपये तथा इक्के-दुक्के को पूरे, यानि, 3200 रुपये दिये जा रहे हैं। श्रम विभाग में इसके खिलाफ हम ने अनेकों शिकायतें की हैं।

हमारे 40 करोड़ रुपये हजम करने के लिये झालानी टूल्स मैनेजमेन्ट खुली गुण्डागर्दी पर उतरी है। गुण्डागर्दी के वास्ते खर्च के लिये मैनेजमेन्ट हमारे वेतन में से गबन और लूट कर रही है :

– झालानी टूल्स मैनेजेमेन्ट के कैशियर हर मजदूर के वेतन में से 10 रुपये काट रहे हैं। कहते हैं कि चन्दे के हैं। हम मजदूर कहते हैं कि नहीं देना हम ने किसी को चन्दा पर कैशियर पैसे लौटाते ही नहीं। मैनेजमेन्ट वेतन में से जबरन 10 रुपये लूट रही है।

– फरीदाबाद के प्लान्टों में किसी मजदूर की मृत्यु पर हर वरकर 10 रुपये देता है जो कि पे-स्लिप में डेथ फन्ड कालम में दर्ज होते हैं और मृत श्रमिक के परिवार को दिये जाते हैं। चार महीनों से झालानी टूल्स मैनेजमेन्ट ने पे-स्लिप के डेथ फन्ड कालम में 0 राशि दर्ज कर 30, 20, 40, 50 रुपये काट लिये हैं। जून 98 के वेतन में तो किसी मजदूर से 40 रुपये और किसी से 50 रुपये लिये हैं। भूखे होते हुये भी चार या पाँच मजदूर ही जून में मरे होंगे पर झालानी टूल्स मैनेजमेन्ट साढे चार मजदूरों को मरा दिखा कर गबन कर रही है।

मैनेजमेन्ट की लूट और गबन के खिलाफ हम ने डी. सी., एस.एस.पी., डी.एल.सी. को अनेकों शिकायतें की हैं। ......

31 जुलाई 98 **(प्रधानमंत्री के नाम झालानी टूल्स मजदूरों का पत्र।)**

कविता

हम मजदूर सूखी-रूखी रोटी के लिये तरसते हैं
हमारी ही मिहनत पर अमीर मेवा-मिठाई खाते हैं
हम एक झोंपड़ी नहीं बना पाते हैं
वो कोठा-अटारी-आलीशान महल बनाते हैं।

दो वक्त की रोटी के लिये देश-विदेश पलायन करते हैं
हम अपने ही बच्चों को अजूबा लगते हैं
बूढे माता - पिता की सेवा नहीं कर पाते हैं
बीबी-बच्चों को प्यार नहीं दे पाते हैं।

कम तनखा के कारण परिवार साथ नहीं रख पाते हैं
दो-चार-छह महीने कमाने के बाद अपने घर लौट पाते हैं
कुली, टी.टी.सी. रंगदार नाजायज टैक्स लेते हैं
क्या करें हम मजदूर मजबूर हैं, टैक्स देने पड़ते हैं।

हम मजदूरों के लिये पर्व-त्यौहार-छुट्टी कभी नहीं आते हैं
लेकिन अमीर प्रत्येक दिन जश्न मनाते हैं
मजदूर कड़ाके की धूप, आग की भट्टी पर खून-पसीना बहाते हैं
हमारी ही मिहनत पर पलने वाले ए.सी. का आनन्द लेते हैं।

अपना ही गाँव, घर अजनबी से लगते हैं
अपने ही घर में परदेसी कहलाते हैं
भाग्य से ही माता-पिता बीबी-बच्चों से मिल पाते हैं
फिर जीविकोपार्जन के लिये पलायन करते हैं।।

— **अजय कुमार**, फरीदाबाद

उभारते हैं बातें गत्ते

❋ **एस्कोर्ट्स मजदूर :** "आप लोगों ने लीडरों को देख लिया और अब स्वयं कदम उठा रहे हैं तो आप कैसे-कैसे और किस तरह के कदम उठा रहे हैं? लीडरों के बगैर कैसे कदम उठाने चाहियें ? मजदूर कुछ करते हैं तो लीडर बीच में आ जाते हैं। एस्कोर्ट्स में बड़ा लफड़ा है। बिना लीडरों के मैनेजमेन्ट से कैसे निपटें इस पर हम लोग आपस में भी विचार कर रहे हैं।"

❋ **थर्मल पावर हाउस वरकर कई मजदूरों के बीच :** "जो बोलता है उसे मैनेजमेन्ट खरीद लेती है। पैसों के लिये बोलना और पैसे मिलने पर चुप हो जाना आम बात है। मैनेजमेन्टें बोलने वालों से भाषण झड़वा कर हड़ताल करवाती हैं और मजदूरों को फँसाती हैं। मेरे पिताजी एक पुराने स्किल्ड मजदूर थे जिन्हें हड़ताल करवा कर मैनेजमेन्ट ने निकाल दिया और काट-पीट कर मात्र 18,000 रुपये का हिसाब दिया। ऐसे में यह गत्ते लिये खड़े लोग यह बता रहे हैं कि क्या करना चाहिये।"

❋ **दिल्ली में कुरियर सर्विस वरकर :** "हमारे यहाँ पिछले महीने तनखा नहीं दी। हम ने तनखा माँगी तो पता चला कि पूरे महीने की हमारी गैर-हाजरी लगा रखी है। सारे महीने ड्युटी की और हाजरी एक नहीं! हम 20-25 वरकर हैं। हमें बहुत गुस्सा आया। सोच-विचार कर हम ने 21 जून से कदम उठाया। बड़े साहब घर पर हों तो वहाँ और दफ्तर में हों तो वहाँ हम दरवाजे के बाहर इकट्ठे हो जाते और बीड़ी, तम्बाकू, खान-पान चलता। हम में से एक-दो को बात करने बुलाया तो हम ने मना कर दिया। गेट के बाहर हम मौन रहते पर इतना जरूर करते कि अपने साथ एक-एक डन्डा लिये रहते और उस पर हाथ अवश्य फेर लेते। वैसे आपस में हम ने तय कर रखा था कि मारना नहीं है। एक लीडर आया तो हम ने उसे भगा दिया। पुलिसवाला आया तो हम ने उससे तनखा की कही और वह खुद चला गया। पाँच दिन लगातार ऐसे करने पर 26 जून को हमारी पूरे महीने की हाजरी लगाई गई और हमें तनखा दे दी गई। इस महीने हमें 5 जुलाई को तनखा दे दी गई। हम ने साफ कह दिया है कि हम सात से सवा सात तारीख नहीं होने देंगे।"

❋ **कटलर हैमर मजदूर :** "तीन साला एग्रीमेन्ट में बढाई प्रोडक्शन पूरी नहीं कर पाने पर हमारी तनखाओं में भारी कटौती होने लगी। मजदूरों का गुस्सा बहुत बढा। यूनियन ने वह एग्रीमेन्ट समाप्त कर दूसरी के लिये मीटिंगें की, भाषण दिये और कहा कि बिना प्रोडक्शन से लिन्क वाली 350 रुपये की एग्रीमेन्ट की है। बाद में पता चला कि 35 परसैन्ट प्रोडक्शन बढा कर देनी है। जून का वेतन अब मिला तो ज्यादातर को 350 रुपये नहीं मिले।

"लीडरों के पास पहले तो कुछ नहीं होता लेकिन लीडर बनते ही उनके पास कहाँ से पैसा आ जाता है कि प्लाट पर प्लाट खरीदने शुरू कर देते हैं। उनकी सेहत भी सही हो जाती है और उनके आने-जाने व रहने के तौर-तरीके बदल जाते हैं।"

❋ **सपना-सोभाग टैक्सटाइल्स वरकर :** "भई आप लोग तो खड़े हो सड़क पर, अपना प्रोटेस्ट कर रहे हो पर सपना-सोभाग के वरकर तो बिलकुल ही बेकार हो गये हैं। हिसाब भी मिलना मुश्किल है। मजदूर सब इधर-उधर भटक रहे हैं।"

भागमभाग में

◆ **रतनचन्द हरजसराय मोल्डिंग** मजदूर : "मैनेजमेन्ट ने 17 जुलाई तक जून का वेतन नहीं दिया तब हम मैनेजमेन्ट को घेर कर बैठ गये। मैनेजमेन्ट ने पुलिस बुला ली। फिर हमें जून की तनखा दी।"

◆ **दिल्ली आटोमोबाइल्स** वरकर : "एक महीने से हड़ताल चल रही है और 250 वरकर इधर-उधर दिहाड़ी की तलाश में हैं।"

◆ **नैपको बेवल गियर** मजदूर : "दो साल से ओवर टाइम का पैसा नहीं दिया है। कहते हैं कि दे देंगे, दे देंगे।"

◆ **सिराको आटो** वरकर : "जून की तनखा 17 जुलाई से देनी शुरू की है और 21 तक सब वरकरों को नहीं दी है।"

◆ **झालानी टूल्स** मजदूर : "फैक्ट्री में जो मार-पीट हो रही है उससे मजदूरों का कोई लेना-देना नहीं है। मैनेजमेन्ट मार-पीट करवा रही है।"

◆ **ऊषा टेलिहोइस्ट** वरकर : "मैनेजमेन्ट और यूनियन ने एग्रीमेन्ट तो वी आर एस का किया है पर लगता है कि जबरन निकालने की कोशिश करेंगे।"

◆ **बोनी शूज** मजदूर : "दो प्लान्ट हैं। एक में मैनेजमेन्ट ने ले ऑफ कर रखी है और दूसरे प्लान्ट में जबरन ओवर टाइम करवा रही है।"

◆ **नूकैम** वरकर : "कुछ महीनों से मैनेजमेन्ट तनखा लेट दे रही है। पहले तो नोटिस में तारीख लिख देती थी पर इस बार लिखा है — 'तनखा देने का समय अनिश्चित।'"

◆ **पोलर फैन** मजदूर : "लड़-झगड़ कर हम ने ओवर टाइम का तो डबल रेट करवा लिया है पर पाँच-छह साल से सर्विस कर रहे वरकरों को मैनेजमेन्ट परमानेन्ट नहीं कर रही।"

◆ **अमेटीप मशीन टूल्स** वरकर : "मैनेजमेन्ट ने 150 मजदूरों की छँटनी के लिये कदम उठाने शुरू कर दिये हैं।"

◆ **इन्डीकेशन** वरकर : "अब सब यूनियनें फेल हो गई। सब बिक जाते हैं। यूनियनों के कहने पर फैक्ट्री बन्द करना महाबेवकूफी है।"

◆ **हरियाणा रोडवेज** ड्राइवर : "मेरा भाई भी झालानी टूल्स में काम करता है। सब वरकर गत्ते ले कर खड़े क्यों नहीं हो रहे ?"

◆ "कहाँ काम करते हो ?" "**ओसवाल इलेक्ट्रिकल्स** में" कह कर वह बोला : "कैजुअलों की कोई फैक्ट्री होती है क्या? आज यहाँ, कल कहीं और।"

◆ **एस्कोर्ट्स फार्मट्रैक** पर एक कैजुअल वरकर के मजदूर समाचार लेने पर एक परमानेन्ट वरकर बोला : "तुम क्या करोगे यह अखबार ले कर ? बेकार में अखबार भी बेकार करोगे।" इस पर कैजुअल वरकर ने जवाब दिया : "हम भी मजदूर हैं और मजदूर समाचार हमारे भी काम का है।"

◆ **मछगर गाँव** से आता वरकर : "पढ कर मजदूर समाचार को गाँव में पंचायतघर में रख दूँगा। वहाँ अलग-अलग फैक्ट्रियों के बहुत मजदूर इकट्ठे होते हैं, वे सभी पढेंगे।"

बात करो भई बात करो

टी. वी. 18 में काम कर चुकी एक वरकर ने बताया : "टी. वी. 18 के प्रमुख ने अपनी छवि आरम्भ में हर इम्पलाई के प्रति खुली सहानुभूति और प्रत्येक को हर समय उपलब्ध रहने वाले की बनाई। धन्धा चल गया और कम्पनी बढती गई। कम्पनी के आरम्भ से रही बड़े साहब की सचिव ने साहब को बताया कि वह गर्भवती हो गई है तो साहब ने बहुत खुशी प्रकट की और कहा कि प्रसुती व देखभाल का सब खर्चा वह उठायेगा और कि सचिव कोई चिन्ता न करे। सचिव खुश। दो-तीन महीने बाद साहब ने टी.वी. 18 में आधे से ज्यादा वरकरों की छँटनी की। और, बड़े साहब ने अपनी सचिव को भी नौकरी से निकालने के आदेश दे दिये! सचिव हक्की-बक्की रह गई। उसे नौकरी की बेहद जरूरत थी और फिर वह एक बच्चे को जन्म देने वाली थी। सचिव ने साहब से अपनी मजबूरी बताई और नौकरी पर रहने देने की विनती की। इस पर बड़े साहब ने कहा, "मेरे से पूछ कर गर्भवती हुई थी क्या ?" साहब ने अपनी सचिव की एक न सुनी। सचिव ने अपने साथ हुये दुर्व्यवहार की चर्चा कम्पनी के अन्य कर्मचारियों से की। बात टी.वी. 18 के वरकरों में फैल गई और व्यापक स्तर पर थू-थू होने लगी। साहब को इन बातों की जानकारी लगी तो उन्होंने नुकसान को कम करने के लिये सचिव को नौकरी से बर्खास्त करने वाला आदेश वापस ले लिया।"

आई. ई. नोर्मस्

15 साल बाद फिर **एस्कोर्ट्स** में आई. ई. नोर्मस् का जाल बिछाया गया है। 1983 की एग्रीमेन्ट में आई. ई. नोर्मस् शब्द था। 1986 में मजदूरों को पता चला कि " बिना वर्क लोड बढाये " वाली 1983 की एग्रीमेन्ट में आई. ई. नोर्मस् की आड़ में तीस परसैन्ट वर्क लोड बढाया गया था। धोखाधड़ी से आगबबूला एस्कोर्ट्स मजदूरों को डराने-धमकाने-बहकाने के लिये तब के यूनियन प्रधान ने " दो बातें" नाम का पर्चा बाँटा था जिसमें लिखा था : ".... हमने I. E. Norms का समझौता किया जो आपको बता दिया गया था .... हमारा काम I. E. Norms करना है....।" (इस बारे में अधिक जानकारी मजदूर समाचार के जनवरी 1987 के अंक में है।)

1998 के आई. ई. नोर्मस् 1983 के आई. ई. नोर्मस् के बच्चे नहीं हैं बल्कि बाप हैं। भारी वर्क लोड और बड़े पैमाने पर मजदूरों की छँटनी वाले आज के आई. ई. नोर्मस् के बारे में भाषण देने वाले ऐसे बोलते हैं जैसे यह तो मान ही लिये हैं। इस सन्दर्भ में **एस्कोर्ट्स फार्मट्रैक** के एक मजदूर ने कहा :

" फार्मट्रैक में अब 600 कैजुअल वरकरों की मदद से प्रोडक्शन देना पड़ता है। सन्डे की सब की ओवरस्टे और नाइट वालों की ओवरस्टे का प्रोडक्शन काउन्ट होता है।

"आई. ई. नोर्मस् वाली नई एग्रीमेन्ट में कैजुअल वरकर हटायेंगे, ओवरस्टे बन्द करेंगे और ऊपर से प्रोडक्शन बढायेंगे।

" बिना नई एग्रीमेन्ट के अभी हम 72 की जगह 93 ट्रैक्टर बनायें तो हमारे इनसैन्टिव तथा ओवरस्टे के 6000 रुपये बनेंगे और 600 कैजुअल वरकर तो हमें मदद करेंगे ही। ऐसे में नई एग्रीमेन्ट में दो हजार के पैकेज में कुछ मिलने की बजाय बहुत ज्यादा देने की बात है। नई एग्रीमेन्ट मैनेजमेन्ट चाहती है।"

इस सिलसिले में **एस्कोर्ट्स फस्ट प्लान्ट** के एक मजदूर ने कहा :

" मैनेजमेन्ट ने 12 से बढा कर शर्तें 20 कर दी हैं। मैनेजमेन्ट की पहली शर्त है आई.ई. नोर्मस् और फिर हैं सैल्फ सैटिंग, सैल्फ इन्सपैक्शन, सैल्फ लोडिंग, बी ओ पी आदि-आदि। आई. ई. नोर्मस् में मिनट-मिनट का हिसाब लगेगा। मजदूरों को साँस लेने तक की फुरसत नहीं छोड़ना चाहते।

" 60-65 परसैन्ट प्रोडक्शन हम बिना एग्रीमेन्ट के ही बढा दें तो हमारे 6000-7500 रुपये बनें। ऐसे में फस्ट प्लान्ट में से एक हजार कैजुअल वरकरों को हटा कर 60-65 प्रतिशत उत्पादन बढाने पर 2000 रुपये ! एग्रीमेन्ट तो मैनेजमेन्ट के लिये है।

" इस जहर पर चीनी की परत चढाने तथा मजदूरों में उलझनें पैदा करने के लिये एस्कोर्ट्स मैनेजमेन्ट अलग-अलग डिविजनों के लिये 900, 1927, 2350, 2350, 3000, 3000, 5040 रुपये इनसैन्टिव के फिक्स करना चाहती है तो कुछ लोग जहर निगलवाने के लिये चीनी की परत को कुछ मोटी करवाना चाहते हैं।"

मजदूरों पर एस्कोर्ट्स मैनेजमेन्ट के हमले की धार आई. ई. नोर्मस् हैं। ऐसे में एस्कोर्ट्स मजदूरों के लिये आई.ई. नोर्मस् को आई-गई नोर्मस् बनाने को प्राथमिकता देना बनता है। इस-उस मामले, इस-उस डिटेल पर भाव-तोल करना भटकना-भटकाना है, मैनेजमेन्ट के हाथों में खेलना है। ■

कुछ ठहर कर

● **अलका प्रिन्ट** मजदूर : " 7 तारीख से पहले हमें वेतन मिलना चाहिये पर मैनेजमेन्ट देरी करती है। इस बार हम ने 8 जुलाई से मैनेजमेन्ट के पास जाना शुरू कर दिया। 10 जुलाई को हम सब इकट्ठे हो कर बड़े साहब के पास गये और बोले कि काम कराये हैं, हमारी तनखा दो। काफी दबाव बनाने के बाद 11 जुलाई को जून का वेतन दिया। अब की बार हम पहली तारीख से ही मैनेजमेन्ट के पास जाना शुरू कर देंगे।"

● **एस एण्ड पी थ्रेड्स** वरकर : " बच्चों की बीमारी की खबर पर छुट्टी की दरखास्त दे कर गाँव गया था। लौटने पर ड्युटी पर नहीं लिया। यह साहब, वह साहब नहीं होने के बहाने बना कर टरकाते रहे। अब मैनेजमेन्ट कहती है कि इस्तीफा दो। परमानेन्ट मजदूरों को निकाल कर मैनेजमेन्ट ठेकेदारी लागू कर रही है।"

● **ओसवाल इलेक्ट्रिकल्स** मजदूर : " मैनेजमेन्ट सब लड़कों को एकदम निचोड़ दे रही है। फिल्म में जैसे अमरीश पुरी कहता है कि मजदूरों को इतना ही दो जिससे यह मात्र जिन्दा रह सकें, मैनेजमेन्ट हमारे साथ ठीक वैसा ही कर रही है। जितनी तनखा हमें देती है उससे 50 गुणा काम मैनेजमेन्ट हम से करवाती है। हम एकदम थक जाते हैं।"

● **स्टड्स हेल्मेट** वरकर : " तनखा बहुत कम है, खर्चा पूरा पड़ता ही नहीं। बहुत मजबूरी में एडवान्स माँगा पर चक्कर कटवाने के बाद आधा भी नहीं दिया। बाकी पैसों का जुगाड़ बहुत जरूरी है। काम स्टड्स में करते हैं, ऐसे में कहीं और से पैसे क्यों मिलेंगे?"

● **ईस्ट इंडिया कॉटन मिल** मजदूर : " आज 10 जुलाई को डी.एल.सी. के यहाँ तारीख थी पर साहब मिले ही नहीं। दिन-भर बैठ कर निराश हो कर लौटे हैं। अगली तारीख का पता ही नहीं किया। तारीखों- मीटिंगों से हम झिक चुके हैं। क्या कोई और रास्ता है जिससे फैक्ट्री खुल सके?"

● **कमला सिनटैक्स** वरकर : " 16 जून को मैनेजमेन्ट ने लेबर डिपार्टमेन्ट में कहा कि 250 मजदूर हिसाब ले लें तो जनवरी व फरवरी की तनखा दे देगी; फैक्ट्री चलायेगी ; मार्च-अप्रेल-मई का आधा वेतन दे देगी। लेकिन 22 जून को मैनेजमेन्ट नाट गई, बोली कि पैसे नहीं हैं। अब लीडर कहते हैं कि मामला यहाँ से उठा लिया है और चण्डीगढ ले गये हैं।"

● **कटलर हैमर** मजदूर : " इन लीडरों ने भी हमें मरवा दिया। कुछ लीडर-टाइप लोग हमारे गुस्से को भुनाने में लगे हैं। चमचे इलेक्शन का ढोल बजा रहे हैं। हम मजदूरों को न तो यह लीडर चाहियें और न कोई और लीडर चाहियें। चुनाव जायें भाड़ में ! हम यहाँ पैसों के लिये आते हैं, हमें तो पैसे चाहियें।"

● **नूफार्म** वरकर : " नूकैम मैनेजमेन्ट कई महीनों से तनखा टाइम पर नहीं दे रही। लीडर लोग सिगरेट और साहबों के पास बैठने में ही बिक जाते हैं। इस बार 7 जुलाई को सुबह ही हमें पता चल गया कि जून की तनखा नहीं मिल रही। इस पर नूफार्म के हम 80-90 मजदूरों ने कदम उठाया और 7 जुलाई को ही साढे चार बजे नूफार्म में मैनेजमेन्ट ने जून की तनखा बाँट दी। नूकैम की केमिकल व अन्य शाखाओं में मैनेजमेन्ट ने 21 जुलाई तक जून का वेतन नहीं दिया है।"

● **थॉमसन प्रेस** मजदूर : " मैनेजमेन्ट ने एक डिपार्टमेन्ट बन्द कर दी है। एक नई मशीन भी आई है। मैनेजमेन्ट अब 250 वरकर निकालना चाहती है। जबरन दूर-दूर ट्रान्सफर कर रही है। 800 मजदूर निकालने के लिये थॉमसन मैनेजमेन्ट ने बहुत बखेड़ा खड़ा किया था। अब फिर लफड़ा करेगी।"

● **सुपर स्विच** वरकर : " 150 थे, अब हम 40 ही रह गये हैं। यूनियन ने हड़ताल करवाई और हम लोग एक महीने बाहर रहे। फिर भाग-दौड़ करके किसी तरह हम 40 मजदूर अन्दर आये। लीडरों ने हड़ताल करवाने से पहले ही हिसाब ले लिये थे, पाँच-पाँच लाख रुपये ले लिये थे।"

● **आटोपिन** मजदूर : " मैनेजमेन्ट तनखा देरी से देती है। यूनियन कुछ नहीं करती। हम चार-पाँच लोग जनरल मैनेजर के पास गये और बोले कि साहब राशनवाला अपने पैसे माँगता है और ना देने पर झगड़ता है।"

एक अन्य आटोपिन वरकर : " हमारी डिपार्टमेन्ट के लोग भी तनखा के लिये जनरल मैनेजर के पास गये थे। हम बारी-बारी से ऐसे जायें तो कोई वरकर मैनेजमेन्ट की निगाह में भी नहीं आयेगा और तनखा के लिये दबाव भी बनेगा।"

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।
RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी-546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।